मंथन के मोती

एकादश प्रतियोगिता -

बिखरता परिवार, ज़िम्मेदार कौन, परिवार की स्त्री की भूमिका कितनी प्रबल.....

बिखरता परिवार, ज़िम्मेदार कौन? परिवार की स्त्री की भूमिका कितनी प्रबल.....लघु लेख के रूप में सुलेखा समिति की एकादश प्रतियोगिता अगस्त 19 के प्रथम सप्ताह से शुरू होकर सितम्बर 19 के अंत में अपनी निश्चित की गयी तिथि पर समाप्त हुई| पूर्व में आयोजित प्रतियोगिताओं की परिपाटी का अनुगमन करते हुए महिला संगठन के एकादश सत्र की यह ग्यारहवीं प्रतियोगिता 25 प्रदेशों की 72 रचनाओं को अपने आँचल में संजोकर सत्र की अंतिम प्रतियोगिता के रूप को प्राप्त हुई| तीन वर्ष के इस सत्र में सुलेखा समिति ने महिलाओं की जागृति एवं चिंतन मनन हेतु ग्यारह विषयों एवं हिंदी साहित्य लेखन की विविध विधाओं को समाज के पटल पर रखा|

इस बार भी महिलाओं के मर्म को छूने वाला विषय रखा गया| प्रत्येक स्त्री चाहे वो माँ, बेटी, बहन, बहू या पत्नी किसी भी रूप में हो, उसका एक मनोभाव यह भी होता है कि अपने घर-परिवार को, अपने इर्द-गिर्द रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रेम की डोर से बाँध कर रख सके| इसी भावना के चलते सभी लेखिकाओं ने परिवार संस्था में प्रेम और विश्वास पर बल दिया| घर की स्त्री को प्रेममयी मूरत होनी चाहिए कई लोगों ने इस पर बल दिया, तो कुछ के अनुसार परिवार के सदस्यों को घर की प्रमुख महिला पर विश्वास बनाये रखने की बात कही| पुरुषों की सकारात्मक भूमिका रहने से घर बंधा रहता है, घर के बंधे रहने में महिला पुरुष दोनों समान रूप से भागीदार हैं, इस पर भी खुल कर लिखा गया| युवा वर्ग की आज़ादी व पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव स्वरुप आयी उच्श्रंखलता को भी कुछ लोगों ने पारिवारिक विघटन का कारण माना| युवतियों में घरेलू कार्यों के प्रति उदासीन भाव पर भी लेखनी उठी| कई महिलाओं ने तो अपनी आप बीती को ही शब्दों में ढ़ाल कर लेखमें पिरोने की कोशिश की| कुल मिलाकर अनेकों परिस्थितियों को इंगित करते हुए पारिवारिक विघटन के कारणों पर रौशनी डाली गयी|

प्रतियोगिता का दूसरा पहलू हर बार की तरह कई कमियों को उजागर कर गया| विषय से हटकर लिखना यानी "पूछा खेत के विषय में, पर बात की खलिहान की" रचनाओं को प्रतियोगिता से बाहर कर देने का एक बड़ा कारण होता है| कई लेखिकाओं ने भ्रमित तरीके से अपने विचार रखे| एकादश सोपान पर आकर हम प्रत्येक लेखिका से लेखन में सुदृढ़ विचार व विषय पर मजबूत पकड़ की आकांक्षा रखते हैं| लगातार लेखन के बाद भी व्याकरण जनित

अशुद्धियाँ, साधारण भाषा प्रस्तुति निर्णायक को मानसिक पीड़ा देती है| शब्द सीमा का उल्लंघन भी रचनाओं को ऊपर आने से रोकता है|

हमारा उद्देश्य विभिन्न विषयों के माध्यम से चिंतन - मनन, पठन - पाठन को बढ़ावा देकर सामजिक जीवन में उत्थान लाना रहा है| सुलेखा अपने इस उद्देश्य में कहाँ तक सफल रही है यह तो अनागत के गर्त में है, पर सुप्त लेखनियों व अंतस में दबे विचारों को कलम बद्ध कर कई नव लेखिकाओं को सबके समक्ष प्रस्तुत किया है| 60 - 65 वर्ष व इससे भी बड़ी वे महिलाएं जो वर्षों से चौके चूल्हे को ही जीवन मान बैठीं थी उन्हें भी नए क्षितिज के दर्शन कराना - "हाँ मैं भी हूँ" या "मेरा भी एक स्वतंत्र अस्तित्व है"| यह आत्म स्वररूप दर्शन करा कर नव चेतना जगाना सुलेखा की बड़ी उपलब्धि है| रचनाओं के प्रतियोगिता में चयन न होने पर लेखिका की बेचैनी....."गलती कहाँ हुई?" या "मुझे क्या करना चाहिए था?" यह जानने की जिज्ञासा साहित्य के प्रति अभिरुचि और समिति की सफलता को इंगित करते हैं| सुलेखा समिति ने समाज को सुन्दर से सुन्दरतम बनाने के महा यज्ञ में अपनी छोटी सी आहुति इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से दी है| हिंदी साहित्य को समाज जन तक पहुंचाने में और लोकप्रिय बनाने में हम किसी हद तक कामयाब हुए हैं|

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट करती है| उनका समिति की कार्य प्रणाली के प्रति दृढ़ विश्वास प्रतियोगिताओं को नए आयाम देता रहा है| सुलेखा समिति की प्रतियोगिताओं को जन जन तक पहुंचाने में प्रदेशों के पदाधिकारी गण का भी बहुत बड़ा योगदान है जिनकी हम प्रशंसा करते हैं| लेखिका समूह का विशेष धन्यवाद, जिनकी लेखनी अनवरत प्रतियोगिताओं को विचार बद्ध करती रही है| सुलेखा समिति ने समाज में एक खूबसूरत रिश्ते का निर्माण किया है जिस में समिति सदस्य, प्रदेश पदाधिकारी, लेखिका समूह सभी एक डोर से बंधे दृष्टिगोचर होते हैं| अंत में हमारे निर्णयाक मंडल का अंतस की गहराईयों से धन्यवाद जिनकी तत्परता, कार्य कुशलता और अप्रतिम सहयोग के कारण सभी प्रतियोगिताएं यथा समय भली भांति संपन्न हुई हैं|

धन्यवाद

मंजू मानधना, दिल्ली
सुलेखा समिति प्रभारी